Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - 5 'अपना - अपना भाग्य' (कहानी) लेखक - जैनेंद्र कुमार

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा आठवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या - 26 पर दिए पाठ - 5 'अपना - अपना भाग्य' नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! 'अपना - अपना भाग्य' कहानी में पिछले सप्ताह पढ़ा था कि लेखक अपने मित्र के साथ नैनीताल में संध्या के समय घूमने का आनंद ले रहे थे। नैनीताल में संध्या के समय घूमने का आनंद ले रहे थे। नैनीताल अपनी प्राकृतिक शोभा के लिए विख्यात (प्रसिद्ध) है। शाम के समय मानो भाप से बादल उनके सिरों को छू - छूकर घूम रहे हो। हल्के प्रकाश व अँधेरे में बादल कभी नीले दिखाई देते तो कभी लाल। बादलों को देख ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे उनके साथ खेलना चाह रहे हों। ठण्ड शुरू हो गई थी। लेखक वापस कमरे में जाना चाह रहे थे लेकिन मित्र को सड़क के किनारे रखी बैंच पर बैठना था। अत: वे वहाँ बैठ गए। थोड़ी देर में उन्हें कोहरे में एक काली छाया आती दिखाई दी। वह एक पहाड़ी लड़का था। वह नंगे पैर, नंगे सिर व एक मैली - सी कमीज़ पहने हुए था। उसकी उम्र लगभग दस - बारह वर्ष होगी।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-5 'अपना-अपना भाग्य')

उसका रंग गोरा तथा बाल बड़े थे। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी पर एकदम सूनी थी। दुनिया से बेखबर वह चला आ रहा था।

बच्चो! अब इस पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ेंगे। लेखक के मित्र को उस गरीब लड़के पर दया आ जाती है और वे उसे आवाज़ लगाकर अपने पास बुलाते हैं एवं पूछते हैं कि पूरी दुनिया सो गई किन्तु तू क्यों घूम रहा है? लेखक की बात सुनकर बालक मूक खड़ा रहा किन्तु उसे देखकर ऐसा लगता था कि जैसे कुछ बोलना चाहता था किन्तु बोल नहीं पा रहा हो। मित्र ने फिर पूछा कहाँ सोएगा? बालक द्वारा जवाब दिया जाता है "यही कहीं"। लेखक के मित्र ने बालक से दूसरा प्रश्न पूछा कि कल कहाँ सोया था? तो उसके उत्तर देते हुए कहा दुकान पर। आज वहाँ क्यों नहीं गया? इस तीसरे प्रश्न के उत्तर में लड़के ने कहा-नौकरी से हटा दिया। लड़के ने उन्हें बताया कि वह एक दुकान पर काम करता था। वह दुकान का सब काम करता था जिसके बदले में उसे एक रुपया और जूठा खाना मिलता था लेकिन आज उसने कुछ नहीं खाया क्योंकि उसके मालिक ने उसे नौकरी से निकाल दिया है। इस कारण आज उसके पास न खाना खाने के लिए पैसे हैं और न सोने के लिए जगह है। वह बालक लेखक एवं उसके मित्र को बताता है कि यहीं-कहीं बाहर भूखे पेट ही सो जाएगा। लेखक के मित्र ने उससे पूछा - 'इन्हीं कपड़ों में?' इस प्रश्न को सुनकर बालक मुँह से कुछ नहीं बोला; लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आँखें बोल रही थीं कि यह कैसा मूर्खता भरा प्रश्न है, जिसके पास पेट भरने के लिए पैसा नहीं है, वह क्या सोने के लिए अलग कपड़ों की व्यवस्था करेगा?

लड़के ने अपने परिवार के विषय में बताया कि उसके माँ-बाप जीवित हैं। वे यहाँ से पंद्रह कोस दूर गाँव में रहते हैं। उसके कई भाई-बहन हैं। भाई-बहन और माँ-बाप भूखे रहते थे। माँ रोती रहती थी इसलिए वह वहाँ से भाग आया। वह अपने एक साथी के साथ यहाँ आया था। वह और उसका साथी एक होटल में काम करने लगे। उसके साथी को किसी साहब ने बहुत मारा और वह मर गया। लड़के की यह बात सुनकर लेखक को अचरज हुआ कि ज़रा सी उम्र में इसने मृत्यु का दृश्य भी देख लिया।

लेखक के मित्र को उस पहाड़ी बालक पर दया आ जाती है। वह उसकी सहायता करने के लिए उस लड़के को लेकर अपने एक मित्र जो वकील थे, उनके होटल में पहुँच गए। वकील मित्र को नौकर की आवश्यकता थी। अतः लेखक के मित्र ने वकील से उस पहाड़ी लड़के को नौकरी पर रखने का आग्रह किया।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं विराम देते हैं। आप सभी इस पाठ को आज हमने जहाँ तक पढ़ा है। पुनः पढ़ेंगे व समझेंगे। सभी छात्र पृष्ठ संख्या-28 तक पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं गृहकार्य के रूप में दिए प्रश्नोत्तर को स्वयं करने का प्रयास करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"बालक फिर आँखों से बोलकर मूक खड़ा रहा। आँखें मानो बोलती थीं — यह कैसा मूर्ख प्रश्न है।"

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-5 'अपना-अपना भाग्य')

प्रश्न (क) किस घटना को सुनकर बालक मूक खड़ा रहा ? उसकी आँखों ने क्या कह दिया था ?
प्रश्न (ख) अपने परिवार के बारे में बालक ने क्या बताया ?
प्रश्न (ग) लेखक को बालक की किस बात को सुनकर अचरज हुआ ?
प्रश्न (घ) लेखक और उसका मित्र बालक को कहाँ ले गए और क्यों ? वकील साहब का पहाड़ी बालकों के सम्बंध में क्या मत (विचार) था ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]